DSSSB PRT, TGT & PGT
Part(A+B)
SCHOLAR BATCH
हिन्दी
निबन्ध साहित्य
LIVE
15-07-2024 09:00 AM

महावीर प्रसाद द्विवेदी 1903

## निबन्ध साहित्य का विकास

वर्तमान में 'निबन्ध' गद्य-साहित्य की एक विधा के रूप में स्वीकृत है, किन्तु संस्कृत में पद्यमयी रचना भी निबन्ध के अन्तर्गत आ जाती थी। इसीलिए 'सरस्वती' के सम्पादन काल तक संस्कृत से पूर्ण परिचित हिन्दी के पण्डित भी गद्य और पद्य दोनों शैलियों में लिखी गई रचनाओं को निबन्ध कहते हैं। आज का हिन्दी निबन्ध-साहित्य संस्कृत की उस प्राचीन परम्परा से भिन्न है। डॉ० वार्ष्णेय के शब्दों में-

"निबन्ध-रचना केवल खड़ी बोली की विशेषता है। खड़ीबोली-गद्य के लिए उन्नीसवीं शताब्दी, और उसमें भी निबन्ध-रचना की दृष्टि से उन्नीसवीं शताब्दी का उत्तरार्ध महत्त्वपूर्ण है। इस दृष्टि से 'निबन्ध' हिन्दी-साहित्य का नितान्त आधुनिक रूप है।"

## भारतेन्दु युगीन निबन्ध,

भारतेन्दु-युग में अंग्रेजी साहित्य के सम्पर्क, भारतीय जीवन में एक नवीन चेतना के उदय, पत्र-पत्रिकाओं के प्रचार तथा जनता के सम्पर्क में आने की साहित्यिकों की महती इच्छा के फलस्वरूप गद्य के एक नवीन विधान का स्वरूप सामने आया। इस नवीन विधान को 'निबन्ध' संज्ञा प्राप्त हुई। भारतेन्दु-युग के प्रमुख निबन्धकार भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (1850-85), प्रतापनारायण मिश्र (1856-94), बालकृष्णभट्ट (1844- 1904) और बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमघन' (1855-1923) हैं। इनके अतिरिक्त लाला श्रीनिवास दास (1851-87), राधाचरण गोस्वामी (1859-1925), मोहनलाल विष्णुलाल पण्ड्या (1850-1912) काशीनाथ- खत्री (1849-1891) तथा चन्द्रभूषण चातुर्वेद्य आदि लेखकों ने भी निबन्ध लेखन किया।

## लाला श्रीनिवास दास

इनके निबन्धों में 'भारत खण्ड की समृद्धि' को बड़ा ही महत्त्वपूर्ण 1919 माना गया है। इसमें भारत के प्राचीन गौरव एवं वर्तमान हीनावस्था का बड़ा ही विस्तृत एवं प्रभावोत्पादक वर्णन किया गया है। इन्होंने 'सदाचरण' नामक आचार सम्बन्धी निबन्ध भी लिखा है। वस्तुत: यह बहुश्रुत व्यक्ति थे और इनका अंग्रेजी का अध्ययन भी अच्छा था। इसलिए यह अपने विचारों को अधिक प्रभावी ढंग से व्यक्त करते थे।

## राधाचरण गोस्वामी

राधाचरण गोस्वामी ने प्राय: सामयिक एवं सामाजिक विषयों पर ही निबन्ध लिखे हैं। यह वृन्दावन से निकलने वाली मासिक पत्रिका 'भारतेन्दु' संवत् (1890) में लिखा करते थे। इनके निबन्धों में मनोरंजन का पर्याप्त पुट लक्षित होता है। इनकी भाषा प्रौढ़ एवं परिमार्जित है। इनके द्वारा लिखित निबन्ध 'यमलोक की यात्रा' है।

## मोहनलाल विष्णुलाल

ये सम्पादक और निबन्धकार दोनों के रूप में प्रसिद्ध रहें। इनके निबन्ध प्रायः सामाजिक विषयों पर आधारित हैं। इनके द्वारा लिखे गए 'हम लोगों की वृद्धि किस रीति से होगी'। बन्धुत्व किसे कहते हैं', 'खुशामद' आदि निबन्ध-अधिक प्रसिद्ध हैं।

## काशीनाथ खत्री

इन्होने भी प्रायः नैतिक एवं सामाजिक विषयों पर ही लेखनी चलाई है। निबन्धों के विषय स्वदेश प्रेम, कर्त्तव्यपालन एवं विधवा विवाह आदि समसामयिक हैं। आचार्य शुक्ल ने इन्हें मातृभाषा का सच्चा

सेवक तो माना है, किन्तु इनकी रचनाओं को शुद्ध साहित्यकोटि में स्थान नहीं दिया है।

## चन्द्र भूषण चतुर्वेदी

इनके निबन्धों में विषय की दृष्टि से अधिक व्यापकता है। इन्होंने पर्व, त्यौहार, धर्म, कर्त्तव्यपालन, स्त्री-महत्त्व, जाति-भेद आदि अनेक विषयों पर लेखनी चलाई है। क्षमा, उपकार छल, आदि मनोविकारों पर भी अपनी धार्मिक दृष्टि से विचार किया है। इनके निबन्ध 'नागरी नीरद' साप्ताहिक पत्र में प्रकाशित होते थे।

## भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का समाज सुधारक व्यक्तित्व भी साहित्यिक व्यक्तित्व से महिमामय नहीं था। इसी कारण इनके निबन्धों में समाज-सुधार की समस्या ही अधिकतर सामने आई है। विशेषकर स्त्री-समाज के उत्थान के सम्बन्ध में इनके विचार स्मरणीय है। तथा भारतेन्दु जी ने अनेक विषयों पर निबन्ध लिखे हैं। 'कश्मीर कुसुम' 'उदयपुरोदय' कालचक्र, 'बादशाह-दर्पण, वैद्यनाथ धाम, हरिद्वार, सरयू पार की यात्रा', विवरणात्मक,

कंकड़ स्रोत स्वर्ग में विचार सभा का अधिवेशन, पाँचवे पैगम्बर, अंग्रेज स्रोत, रामायण का समय, काशी, मणिकर्णिका, तदीय सर्वस्व, संगीत सार, जातीय संगीत, हिन्दी भाषा और नाटक आदि।

शैली की दृष्टि से इन्होंने विचारात्मक, भावात्मक, आत्मव्यंजक, वर्णनात्मक, 'कथात्मक' सभी शैलियों में निबन्ध-रचना की है। 'नाटकों का इतिहास, विचारात्मक निबन्धों में महत्त्वपूर्ण है 'सूर्योदय' भावात्मक निबन्धों में प्रसिद्ध है। 'ईश्वर बड़ा विलक्षण है' आत्मव्यंजक निबंधों की कोटि में आ जाता है। 'बसन्त' 'ग्रीष्म ऋतु' वर्षाकाल, वैद्यनाथ की यात्रा, आदि निबन्ध वर्णनात्मक हैं। एक 'अद्भुत अपूर्व स्वप्न' कथात्मक निबन्ध है। इस प्रकार अपने युग की सभी प्रचलित शैलियों में निबन्ध रचना करके भारतेन्दु ने विलक्षण प्रतिभा का परिचय दिया है।

## प्रतापनारायण मिश्र

हिन्दी खड़ीबोली के निर्माताओं में मिश्र जी का प्रमुख स्थान है, इन्होंने गम्भीर और साधारण दोनों प्रकार के विषयों पर सुन्दर निबन्ध लिखे हैं-बात, बुढ़ापा, दांत, भौं, रिश्वत, मुच्छ, धोखा, बंदरों की सभा आदि साधारण विषयों के अतिरिक्त इन्होंने प्रचलित कहावतों पर भी निबन्ध लिखें हैं, जैसे- समझदार की मौत आदि है इसके अतिरिक्त मिश्र जी ने सामाजिक, राजनैतिक और साहित्यिक विषयों पर भी विचारपूर्ण गम्भीर निबन्ध लेख लिखे। इनके निबन्धों में हास्य और व्यंग्य का अच्छा पुट है, जिसके कारण इनके निबन्धों में चुटीलापन और जिन्दादिली दिखाई देती है।

## श्री बालकृष्ण भट्ट (1844-1914)

बालकृष्ण भट्ट सफल नाटककार एवं उपन्यासकार होने के साथ एक अच्छे निबन्धकार भी थे। 'भट्ट निबन्धावली' में उनके उत्कृष्ट निबन्धों का संकलन है, जो हिन्दी साहित्य सम्मेलन में कई भागों में प्रकाशित हुआ है। इसमें उनके साहित्यिक, सामाजिक, राजनीतिक सभी प्रकार के निबन्ध थे, जो अपनी शैली और प्रांजल भाषा के कारण सराहे गए। उनके व्यंग्य लेखन में "इंग्लिश पढ़े जो बाबू होय", नाक निगोड़ी भी बुरी बला है, "पंचों की सोहबत", हम डार-डार तुम पात-पात, ईश्वर भी क्या ठठोल है; "पुरूष अहेरी की स्त्रियाँ अहेर है", आदि रचनाएँ भी खूब चर्चित रहीं।

## बदरी नारायण चौधरी प्रेमघन (1855-1923) ई0

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के मित्र बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' मासिक-पत्र आनन्द कादम्बिनी तथा साप्ताहिक-पत्र 'नागरी नीरद' के सम्पादक थे। इन पत्रों में उनके अनेक निबन्ध प्रकाशित हुए यथा-हिन्दी भाषा का विकास परिपूर्ण प्रवास, उत्साह आलम्बन, नेशनल कांग्रेस की दुर्दशा, भारतीय प्रजा के दुःख की दुहाई और ढिठाई पर गवर्नमेंट की कड़ाई, बनारस का बुढ़वा मंगल, दिल्ली दरबार में मित्र मण्डली के यार आदि।

'चौधरी प्रेमघन' की भाषा में अलंकारिता, कृत्रिमता और चमत्कार उत्पन्न करने का प्रयास मिलता है। एक बार इन्होंने रामचन्द्र शुक्ल की एक पंक्ति को सुधार कर इस तरह लिखा था- 'दोनों दलों की दल-दली में दलपति का विचार भी दल-दल में फंसा रहा।' दलपति का विचार दलदल में फँसा या नहीं, किन्तु इसमें कोई सन्देह नहीं कि 'प्रेमघन' जी की भाषा सदा इसी कृत्रिमता के दलदल में फंसी रही।

बालमुकुन्द गुप्त और राधाचरण 'गोस्वामी भारतेन्दु-युग और द्विवेगी-युग को मिलाने वाली दो कड़ियों के सदृश्य हैं। बालमुकुन्द गुप्त ने बंगवासी' और 'भारत मित्र' का सम्पादन करते हुए अनेक निबन्ध लिखे हैं। गुप्त जी के द्वारा लिखे गए निबन्ध, 'शिवशम्भु का चिट्ठा' के आठों चिट्ठे बड़े व्यंग्यपूर्ण एवं मधुर हास्य से पूर्ण शैली में देशभक्ति की भावना से ओतप्रोत हैं। 'अम्बिकादत्त व्यास' ने 'धैर्य, क्षमता, जैसे मनोवैज्ञानिक निबन्ध और ग्रामवास 'नगरवास' जैसे वर्णनात्मक निबन्ध लिखे हैं।

## द्विवेदी युग

हिन्दी निबन्ध का द्वितीय उत्थान 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका' तथा 'सरस्वती' के प्रकाशन से प्रारम्भ होता है। महावीर प्रसाद द्विवेदी ने सरस्वती में लगभग तीन सौ से भी अधिक अनेक प्रकार के उपयोग, ज्ञान-विषय, ऐतिहासिक, पुरातत्व-समीक्षा सम्बन्धी निबन्ध और लेख लिखें, जो 'रसज्ञ रंजन, लेखांजलि, संचयन, संकलन, और अद्भुत अलाप आदि। इन्होंने गद्य की अनेक शैलियों का प्रवर्तन तथा भाषा का संस्कार किया। उन्होंने अग्रेजी को लेखक 'बेकन' के निबन्धों का

अनुवाद भी 'बेकन विचार रत्नावली' के नाम से प्रस्तुत किया, जिससे हिन्दी के अनेक लेखकों के निबन्ध लिखने की प्रेरणा मिली। महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा लिखित अन्य निबन्ध है- सम्पत्ति शास्त्र, रसज्ञ रंजन, लेखांजलि, नाट्यशास्त्र, उपन्यास रहस्य, आगरे की शाही इमारतें, कालिदास के समय का भारत, दण्डदेव का आत्मनिवेदन, भाषा और

व्याकरण, कवि और कविता, महाकवि माघ का प्रभात वर्णन, दमयन्ती का चन्द्रोपालम्भ, कवि बनने के सापेक्ष साधन, म्युनिसिपैलिटी के कारनामे, सुतापराधे जनकस्य दण्ड, आत्मनिवेदन, प्रभात, नेपाल आदि।

**अध्यापक पूर्ण सिंह** सरदार पूर्ण सिंह

अध्यापक पूर्ण सिंह इस युग के श्रेष्ठ आत्मव्यंजक निबन्धकार कहे जाते हैं। तो उनके निबन्ध नैतिक और सामाजिक विषयों से सम्बद्ध हैं, किन्तु उनका प्रतिपादन स्वच्छन्द आत्मव्यंजक शैली में किया गया है। इनके द्वारा लिखित निबन्ध हैं- सच्ची वीरता, आचरण की सभ्यता, मजदूरी और प्रेम कन्यादान आदि।

## माधव प्रसाद मिश्र

माधव प्रसाद मिश्र द्विवेदी युग के सर्वश्रेष्ठ निबन्धकार थे। उनके द्वारा लिखित निबन्ध हैं- परीक्षा, रामलीला आदि।

## गोविन्द नारायण मिश्र

गोविन्द नारायण मिश्र का नाम उनकी विचित्र अलंकारपूर्ण संस्कृत शब्दावली से लदी काव्यमय और बनावटी शैली के लिए लिया जाता है। इनके द्वारा लिखित निबन्ध हैं- प्राकृत विचार, विभक्ति विचार, कवि और चित्रकार आदि।

## चन्द्रधर शर्मा गुलेरी

चन्द्रधर शर्मा गुलेरी भी स्वतन्त्र विचारों के लिए प्रसिद्ध हैं। निबन्ध इन्होंने कम ही लिखे। परन्तु इनकी रचनाओं में जीवन को उठाने की प्रेरणा और नए विचारों का खजाना मिलता है। संस्कृत के महापण्डित होते हुए भी पुरानी लकीर पीटने वाले नहीं

थे। प्राचीन धार्मिक कथाओं की ये वैज्ञानिक और बुद्धसम्मत व्याख्या करते थे। 'कछुआ धर्म' नामक निबन्ध भी गम्भीर तर्कपूर्ण, प्रभावशाली, विचार-प्रधान शैली इनकी विद्वता और तर्क-कुशलता का सुन्दर उदाहरण है।

## जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी

जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी हिन्दी के हास्य रस के कवि, साहित्यकार एवं पत्रकार थे। वर्ष 1922 में उन्होंने हिन्दी साहित्य सम्मेलन की अध्यक्षता की थी। उन्होंने काव्य सृजन के साथ गद्य के अन्तर्गत –

– निबन्ध सृजन भी किया। उनके द्वारा लिखे गए निबन्ध हैं- गद्य माला, निबन्ध-निश्चय, पिक्चर की पूजा, अनुप्रास का अन्वेषण आदि।

## बाबू श्याम सुन्दर दास

बाबू श्याम सुन्दर दास, द्विवेदी युग के महान साहित्यकार, हिन्दी को गौरव शिखर पर प्रतिष्ठित करने वाले गद्य निर्माताओं में से हैं। इनके द्वारा लिखित निबन्ध है; साहित्य की विशेषताएँ, समाज और साहित्य, कर्त्तव्य और सभ्यता आदि।

माखनलाल चतुर्वेदी के निबन्धों में व्यंजन और वक्रोक्ति का सबसे अधिक प्रयोग मिलता है। उनकी भाषा में कथन की लाक्षणिकता, सूक्तिमयता तथा प्रवाह नजर आता है। निबन्ध विकास में उनका विशेष योगदान रहा है।

## पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी

पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी 'पंचपात्र' इस हास्य-व्यंग्यात्मक निबन्ध संग्रह के माध्यम से अपने समय की सामाजिक रुढ़ियों अन्धश्रद्धा, साम्प्रदायिकता, जातिभेद आदि पर तीव्र व्यंग्य बाण चलाते हैं। उनके

'उत्सव' 'अतीत स्मृति' 'रामलाल पण्डित' आदि निबन्ध इस दृष्टि से

महत्त्व रखते हैं।

'मेरा जीवन क्रम' 'समाज सेवा', व्यक्ति समस्या, जाति समस्या, राष्ट्र समस्या, साहित्य और समाज, शुद्र की महत्ता जैसे निबन्ध उनकी विचारात्मक तथा गम्भीर प्रवृत्ति के बावजूद इनके निबन्धों में व्यंग्य की धार पैनी नजर नहीं आती। उनके अधिकत्तर निबन्ध विज्ञान, साहित्य तथा दर्शन शास्त्र विषयों पर लिखे नजर आते हैं।

## सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

'निराला' ने 'मतवाला' तथा 'सुधा' जैसी पत्रिकाओं से अपने व्यंग्य निबन्धों का सृजन किया है। अपने बेबाक व्यक्तित्व एवं वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण से निराला ने अपने समय की राजनीति, समाज, धर्म, पूँजीवादी अर्थव्यवस्था तथा सांस्कृतिक क्षेत्र की विसंगतियों को अपने व्यंग्य का लक्ष्य बनाया। उनके व्यंग्य में आक्रोश की गहरी मानवीय संवदेना भी नजर आती है। उनके प्रतिनिधि निबन्ध 'प्रबन्ध' पद्म भाग-2 'प्रबन्ध पूर्णिमा, प्रबन्ध प्रतिमा, समीक्षाकृत कृति आदि शीर्षकों से संग्रहीत हैं।

## पद्म सिंह शर्मा

पण्डित पद्मसिंह शर्मा आर्य विचारक, दार्शनिक, समीक्षक, सम्पादक परोपकारी, हिन्दी साहित्यकार, प्रसिद्ध लेखक और समालोचक थे। हिन्दी का सर्वोच्च पुरस्कार मंगला प्रसाद पारितोषिक उन्हें ही सबसे पहले दिया गया। इनकी लेखन शैली अनुपम थी। 'रेखाचित्र, संस्मरण' आदि विधाओं का प्रवर्तन हिन्दी में उन्होंने ही किया था। इनके द्वारा लिखित निबन्ध है मुझे मेरे मित्रों से बचाओं, दयानन्द सरस्वती भर गए, हिन्दी के प्राचीन साहित्य का उद्धार।

## शुक्ल युग (छायावाद युग)

वर्ष 1919 से 1938 तक के काल की शुक्ल युग कहा जाता है। हिन्दी गद्य साहित्य में महत्त्वपूर्ण योगदान करने वाले विद्वान आचार्य रामचन्द्र

शुक्ल जी के नाम पर शुक्ल युग नाम दिया गया। इस युग को 'प्रसाद युग' 'प्रेमचन्द युग' 'छायावादी युग', के नामों से भी जाना जाता है।

## आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

'आचार्य रामचन्द्र शुक्ल' के आरम्भिक निबन्ध 'सरस्वती', 'आनन्द कादंबिनी' आदि पत्रिकाओं में नजर आते हैं। अपने गम्भीर व्यक्तित्व, प्रखर पांडित्य, गहन चिंतन के चलते उन्होंने विचारात्मक निबन्धों का निर्माण किया। उनके निबन्ध 'चिंतामणि भाग 1 तथा 2 में प्रौढ़ रूप से संकलित हैं। शुक्ल जी का झुकाव मनोवैज्ञानिक भाव विश्लेषण की ओर अधिक रहा है उनके निबन्ध इस प्रकार हैं।

| निबन्ध संग्रह | सम्पादक | वर्ष | संकलित निबन्ध |
|---|---|---|---|
| चिन्तामणि (भाग -1) | रामचन्द्र शुक्ल | 1989 | भाव या मनोविकार, उत्साह, श्रद्धा और भक्ति, करुणा, लज्जा और ग्लानि, लोभ और प्रीति, घृणा, ईर्ष्या, भय, क्रोध, कविता क्या है? भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, तुलसी का भक्तिमार्ग, मानस की धर्म भूमि, काव्य में लोकमंगल की साधनावस्था, साधारणीकरण और व्यक्तिवैचित्र्यवाद, रसात्मक बोध के विविध रूप। |

| | | | |
|---|---|---|---|
| चिन्तामणि (भाग-2) | विश्वनाथ प्रसाद मिश्र | 1945 | काव्य में प्रकृति-दृश्य, काव्य में रहस्यवाद, काव्य में अभिव्यंजनावाद |
| चिन्तामणि (भाग-3) | नामवर सिंह | 1983 | |
| चिन्तामणि (भाग-4) | कुसुम चतुर्वेदी एवं ओम प्रकाश सिंह | | 1902 से 1939 तक प्रकाशित निबन्ध कुल 47 निबन्ध संकलित है |

❖ आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का 'चिन्तामणि (भाग-1) प्रथमत: 'विचार वीथी' वर्ष '1930' में प्रकाशित हुआ था।

❖ कविता क्या है? निबन्ध सर्वप्रथम सरस्वती पत्रिका में वर्ष 1909 में प्रकाशित हुआ।

*आचार्य शुक्ल के कुछ प्रमुख कथन एवं सूक्तियाँ भी प्रचलित हैं जो निम्नांकित हैं-*

1. श्रद्धा और प्रेम के योग का नाम भक्ति है।
2. श्रद्धा का व्यापार स्थल विस्तृत है, प्रेम का एकान्त। प्रेम में घनत्व अधिक है, श्रद्धा में विस्तार।
3. लोभ सामान्योन्मुख होता है प्रेम विशेषोन्मुख।
4. करुणाशील और सात्विकता का संस्थापक भाव है।
5. सामाजिक जीवन की स्थिति और पुष्टि के लिए करुणा का प्रसार आवश्यक है।
6. बैर क्रोध का आचार या मुरब्बा है।